Peer Reviewed Refereed and UGC Listed Journal (Journal No. 47026)

ISSN 2319 - 359X

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

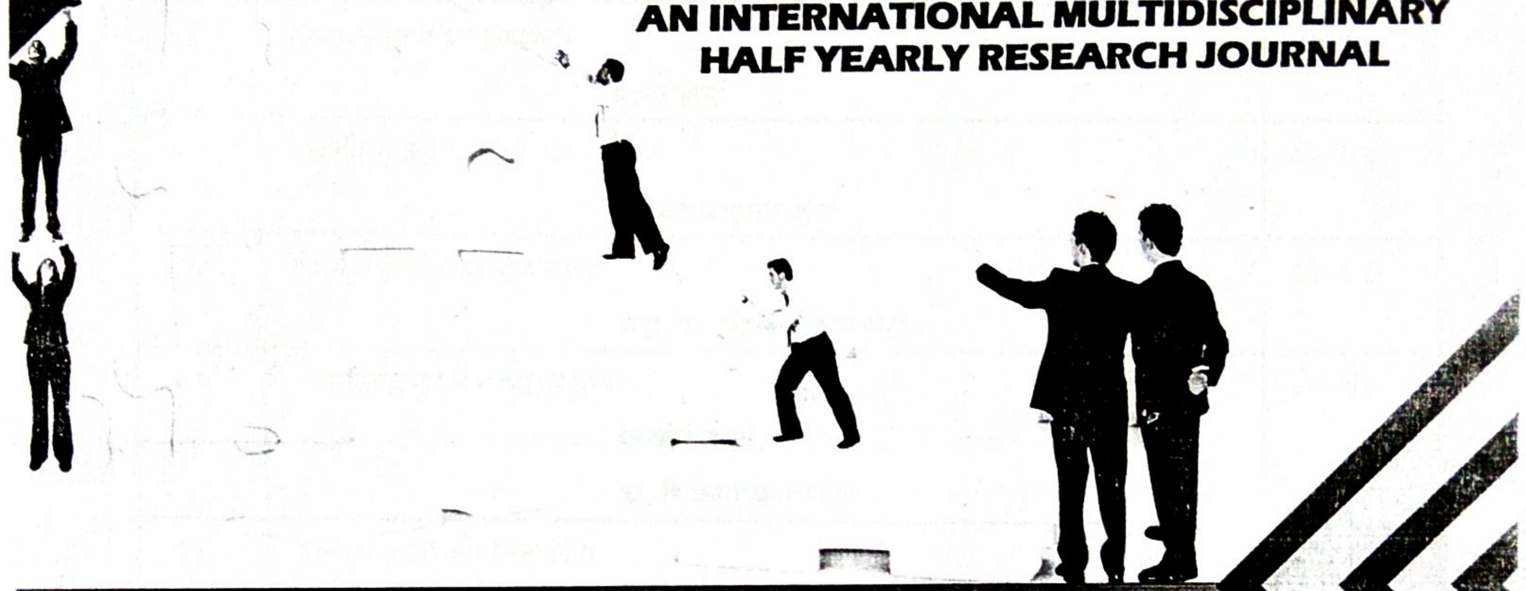

IDEAL

Volume - X, Issue - II,
March - August - 2022
Hindi Part - I

IMPACT FACTOR / INDEXING
2020 - 6.008
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१३	शास्त्रीय संगीत और लोक-संगीत **सहा. प्राध्यापक सतिश जमधाडे**	५७-६०
१४	ख्याल गायन में वर्तमान स्थिति **सागर शर्मा**	६१-६२
१५	वेद और पुरोणों में संगीत **डॉ. संजय कुमार वर्मा**	६३-६६
१६	वेद एवं पुराणो में शास्त्रीय संगीत **सहा. प्रा. संतोष मुकिंदा धंदरे**	६७-६८
१७	भक्ति आन्दोलन में संगीत की भूमिका **शिवांगी शर्मा** **डॉ. शिवनारायण प्रसाद**	६९-७२
१८	शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत **डॉ. शिवदास वि. शिंदे**	७३-७५
१९	छत्तीसगढ़ी लोक संगीत में सुवा गीत **डॉ. श्रद्धा चोपड़ा**	७६-८१
२०	शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत **डॉ. शुभांगी टोळे (उमाळे)**	८२-८३
२१	शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत **डॉ. सुमन त्रिपाठी**	८४-८७
२२	ख्याल गायन की वर्तमान स्थिति **सहा.प्रा. सुशील वावरकर**	८८-९२
२३	शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत **आशा देवी**	९३-९६
२४	टप्पा गायन शैली का उद्गम और विकास **Chahat Sharma**	९७-१००

VOLUME - X, ISSUE - II - MARCH - AUGUST - 2022
IDEAL - ISSN - 2319 - 359X - IMPACT FACTOR - 6.008 (www.sjifactor.com)

२२. ख्याल गायन की वर्तमान स्थिति

सहा. प्रा. सुशील वावरकर
संगीत विभाग, श्री. गणेश कला महाविद्यालय, कुंभारी, अकोला, महाराष्ट्र।

सारांश

प्रस्तुत शोध लेखन में घरानेदार संगीत शिक्षा का बदलता स्वरूप उस में हो रहे परिवर्तन, बदलाव, उसकी वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। तथा आज संगीत शिक्षण में उत्पन्न हो रही समस्याएं तथा उनका किस प्रकार से निराकरण किया जाए उस पर अपने विचार प्रकट किए हैं । ख्याल गायन में शिक्षा, अध्ययन व अध्यापन का प्राचीन काल से एक विशेष स्वरुप रहा है, शुरुआती दौर में गुरुकुल शिक्षा पद्धति थी। बाद में घराना शिक्षा पद्धति और आज संस्था शिक्षा पद्धति से महाविद्यालय में संगीत की शिक्षा का दौर चल रहा है। जिसके कारण शास्त्रीय ख्याल गायन की शैली में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही है। उनका किस प्रकार से निराकरण करना उस पर प्रस्तुत शोध लेखन किया है।

मुख्य बिंदु

१. **प्राचीन काल से समय के साथ ख्याल गायन का बदलता स्वरूप।**

२. **संस्थागत विद्यालयीन संगीत शिक्षण पद्धति।**

प्रस्तावना

युग परिवर्तन सृष्टि का अबाधित नियम है। जिसके अंतर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक वातावरण भी बदलते रहे हैं। अतः युगानुकूल संगीत शिक्षा पद्धति में भी परिवर्तन होते रहे हैं, जो स्वाभाविक है। प्राचीन गुरु शिष्य परंपरा की शिक्षा में भी अति प्राचीन, प्राचीन, मध्यकाल प्रारंभ, मध्य मध्योत्तर, वर्तमान पूर्व, मध्य वर्तमान इस प्रकार काल भेद दिखते हैं। संस्थागत विद्यालयीन संगीत शिक्षण पद्धति से पूर्व प्रचलित गुरु शिष्य परंपरा से लेकर आज तक संगीत शिक्षा में अनेक परिवर्तन होते रहे हैं और हो रहे हैं जिनमें कुछ गुण और दोष भी दिखाई पड़ते है।

शास्त्रीय संगीत की आज की स्थिति से संगीत से संबंधित कोई भी व्यक्ति खुश नहीं है। वैसे तो शिक्षा जगत में सभी विषयों का स्तर गिरा है परंतु जो कला विषय होते हैं उनकी प्रस्तुति जनसामान्य के सामने होने से यह बात ज्यादा स्पष्ट होती है। संगीत विषय में अपनी कमजोरी छुपाने का कोई मार्ग नहीं होता। शास्त्रीय संगीत में एकल प्रस्तुति होने से उसकी कुशलता प्रतिमा व साधना स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। और इसी कारण जब प्रस्तुतकर्ता कलाकार या विद्यार्थी अपने विषय में कमजोर होगा तब वह श्रोताओं से छिपा नहीं पाता। शास्त्रीय संगीत को सीखने का समान अधिकार व सुविधा प्राप्त हो इस उद्देश्य पंडित विष्णु भातखंडे जी एवं पंडित विष्णु पलुस्कर जी ने अथक प्रयत्न कर स्वतंत्रता पूर्व ही संगीत के कुछ विद्यालय राजा महाराजाओं के

दान एवं प्रयत्न से प्रारंभ किए। इस प्रकार संगीत विद्यालय खुले व आगे के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ यह विद्यालय कड़े नियमों के कारण वह उचित संचालन के कारण गुणवत्ता में श्रेष्ठ थे। परंतु परिस्थिति तब बदली जब स्नातकोत्तर काल में महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में संगीत भी एक अन्य विषय की तरह रखा गया। ऐसा करते समय कुछ मुख्य बातों पर ध्यान नहीं दिया गया। जैसे कालखंड का समय, पाठ्यक्रम भर्ती में चयन न रखना, प्रायोगिक शास्त्र के अंकों में विषय के महत्त्व अनुसार सही अनुपात नहीं होना इत्यादि।

विद्यालय एवं महाविद्यालयों में पाठ्यक्रम इतना अधिक है कि विद्यार्थी अपने पढ़ाई के अतिरिक्त किसी भी कला को सीखने के लिए नियमित व उचित समय नहीं दे पाता। प्रतिभावन विद्यार्थियों की कमी नहीं है परंतु संगीत विषय भी तभी आत्मसात होगा जब नियमित रूप से 10- 15 साल उसके लिए समय दें। आधा अधूरा ज्ञान, अनियमित अभ्यास, थोड़ी तैयारी, और पाठ्यक्रम का थोड़ा सा भाग तैयार करके परीक्षा देना आदि कारणों से संगीत का स्तर गिरते चला गया। परीक्षा लेने में भी लापरवाही की जा रही है। इसके मूल में भी कई कारण है जैसे .

१. बि.ए. में संगीत विषय लेकर आने वाले विद्यार्थियों को संगीत विषय का जरा भी ज्ञान न होना
२. संगीत विषय लेने वाले छात्रों का चयन न होना।
३. स्वर ताल परीक्षण न होना।
४. विद्यालय शिक्षा में संगीत विषय का न होना।

पिछले कई वर्षों से तो स्थिति यह है कि यह विषय वही विद्यार्थी लेते हैं जिन्हें अन्य विषयों में प्रवेश नहीं मिलता ज्यादातर बुद्धिमान व मेहनती छात्र.छात्राएं अच्छे.अच्छे प्रोफेशनल कोर्स कर रहे हैं। जिनको भविष्य में अच्छी नौकरी मिलने की संभावना रहती है। सामान्यतः ऐसे विद्यार्थी जिनका बौद्धिक स्तर अत्यंत सामान्य है या जिन्हें आरक्षण की वजह से प्रारंभ से ही शिक्षा मुफ्त मिलती है कॉलेज में कम अंक होने से अन्य किसी विषय में प्रवेश नहीं पाते। ऐसी परिस्थिति में केवल फ्री शिप का लाभ उठाने के लिए यह संगीत विषय ले लेते हैं। और पूरे साल कक्षा में नहीं आती शिक्षक के लिए यही से समस्या प्रारंभ होती है। छात्रों को संगीत विषय का प्रारंभिक ज्ञान तक नहीं होता उन्हें बी.ए. प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम करना मुश्किल ही नहीं असंभव सा हो जाता है।

उम्र के हिसाब से भी यह बच्चे इतने बड़े होते हैं कि उनमें संगीत के संस्कार पैदा कर विषय में रूचि बढ़ाना एवं कोर्स पूरा करना असंभव हो जाता है। समय भी कम रहता है। विद्यार्थी प्रवेश लेकर भी प्रयास से दो तीन महीने भी पढ़ने नहीं आते। इन अनियमित छात्राओं को बीच में होने वाली छुट्टियां एवं युवा उत्सव, एन.सी.सी., खेलकूद आदि अनेक कारणों से विद्यार्थी अत्यंत अनियमित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक हतबल हो जाते हैं। शिक्षक को यह अधिकार भी प्राप्त नहीं है कि वह योग्य विद्यार्थियों को ही चयन करके संगीत विषय में प्रवेश दे। वर्तमान में अधिकतर विद्यालयों में कक्षा बारहवीं तक संगीत विषय नहीं है।अतः

बी.ए. प्रथम वर्ष में आने वाला विद्यार्थी संगीत विषय में अनभिज्ञ होता है। जबकि कॉलेज में प्रवेश लेने के पूर्व विद्यार्थियों को संगीत का प्रारंभिक ज्ञान होना चाहिए। यह विषय ऐसा भी नहीं है कि किताब पढ़कर परीक्षा दी जाए। व्यक्तिश: एक एक विद्यार्थियों को ध्यान व समय देना पड़ता है।

अधिकतर छात्र बेसुरे बेताल एवं मेहनत से जी चुराने वाले होते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक उन्हें तैयार करें भी तो कैसे। फिर भी कई ईमानदार शिक्षक है जो उन्हें प्रारंभ से सिखाने का प्रयत्न करते हैं । स्वर अलंकार का अभ्यास कराने का प्रयत्न करते हैं। परंतु इससे भी निराशा हाथ इसलिए लगती है कि जितनी तन्मयता से शिक्षक सिखाने में दिखाते हैं छात्र सिखाने में नहीं दिखाते। उन्हें शिक्षक का किसी प्रकार का भय नहीं होता।

विषय की दृष्टि से महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में कार्य दिवस भी कम पड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में कई शिक्षक विद्यार्थियों व समय के साथ समझौता कर लेते हैं। वह अपना सिखाने का काम कर देते हैं विद्यार्थियों को आए या ना आए। परीक्षा संपन्न हो जाती है। विद्यार्थी पास हो जाते हैं। इस विषय पर यदि परीक्षा कायदे से हो और कोई परीक्षक छात्रों को परीक्षा में कम अंक दे या फेल कर दे तो मुश्किल हो जाती है।

परीक्षक पर लांछन, पेपर बाजी, फोन पर धमकियां आदि तरह तरह की राजनीति छिड़ जाती है। जो परीक्षा की स्वास्थ्य प्रणाली को ध्वस्त कर चुकी है। ऐसी स्थिति में इस प्रकार के कर्तव्यनिष्ठ परीक्षकों को बुलाना ही बंद कर दिया जाता है। और कई शिक्षक इस तरह अपना रास्ता साफ कर लेते हैं।

दिन प्रतिदिन जनसामान्य में सुगम संगीत चित्रपट संगीत का महत्व बढ़ जाने से और शास्त्रीय संगीत के जानकार कम होने से संगीत विषय में सामान्य जनता की रुचि नहीं है। इस विषय में बड़ी बड़ी नौकरियां को स्पष्ट भविष्य ना देखने से बच्चों के अभिभावक एवं संस्था के अधिकारी वर्ग इस विषय से संबंधित समस्याओं पर ध्यान नहीं देते। शास्त्रीय संगीत की स्थिति पिछले 20- 25 वर्षों में निरंतर बिगड़ती जा रही है। और इसमें सुधार की संभावना अत्यंत कम दिखाई देती है। फिर भी शास्त्रीय संगीत के गिरते स्तर में सुधार लाने के लिए कुछ सुधार किए जाए जो कि शास्त्र सम्मत है तो निश्चित ही संगीत की स्थिति सुधर सकती है। जैसे उचित छात्र का चयन, प्रारंभिक शिक्षा पर जोर, विद्यार्थी के कंठ का ध्यान रखकर अध्यापन करना इत्यादि।

विद्यार्थी किस विषय के लिए उपयुक्त है यह देखना नितांत आवश्यक है। अधिकार व मानव प्रवृत्ति के आधार पर विद्यार्थी का चयन आचार्य के बुद्धि विशेष की कसौटी है। तथा शास्त्रीय संगीत, कंठ संगीत, वाद्य संगीत व नृत्य में से विद्यार्थी क्या सीख सकता है इसे चयन कर विद्यार्थियों को विषय देना चाहिए। तदनुसार शिक्षक व्यवस्था का प्रबंध भी होना चाहिए ।

कलाओं के अध्ययन के लिए 6 से 16 वर्ष की आयु उपयुक्त मानी जाती है 16 वर्ष के बाद कंठ स्वर में स्वरभंग उत्पन्न हो जाता है। इस दृष्टि से बाल्यावस्था का कालखंड संगीत कला के अध्ययन के लिए उपयुक्त माना जाता है। अतः कक्षा 6 से 12 तक विद्यार्थियों में संगीत विषय होना चाहिए। परीक्षा प्रणाली में

सुधार अत्यंत आवश्यक है। परीक्षक द्वारा दिए गए गुणों पर किसी प्रकार की प्रक्रिया बाहरी व्यक्ति को नहीं करनी चाहिए। विद्यार्थियों में अनुशासन व नियमितता अत्यंत आवश्यक है। विद्यार्थियों की मानव प्रवृत्ति तथा जीवन उद्देश्य के अनुकूल विषयों का चयन एवं पाठ्यक्रम विद्या की सफलता का कारण है। संगीत शिक्षा अब रोजगार मूलक होनी चाहिए। जो विद्यार्थी कलाकार होना चाहता है उसका पराक्रम व शिक्षण व्यवस्था भिन्न होनी चाहिए।

जो विद्यार्थी सुगम संगीत के क्षेत्र में जाना चाहते हैं उनका पाठ्यक्रम विभिन्न होना चाहिए। संगीत क्षेत्र में आगे क्या बनना है या करना है यह विद्यार्थी को अपने छात्र जीवन में सुनिश्चित कर वैसी तैयारी करना चाहिए।

वह महाविद्यालय विद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रम माननीय होना चाहिए जिस तरह अन्य विषय के विद्यार्थी अपने भविष्य के प्रति कक्षा 10 से सचेत हो जाते हैं उसी तरह संगीत के विद्यार्थियों को अपनी तैयारी करनी होगी ।

आजकल कई विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में नियुक्त शिक्षकों का स्तर भी ठीक नहीं रहता है जिससे जो ज्ञान विद्यार्थियों को मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाता कम समय में बहुत सारा पाठ्यक्रम करना पड़ता है पाठ्यक्रम पूरा तैयार करवाने के कारण शुरू की स्थिरता पर ध्यान नहीं दिया जाता नहीं अलंकारों का अभ्यास करवाया जाता है ।

हर वर्ग में शिक्षक बदल जाने से किसी एक सहेली को नहीं अपनाया जा सकता जिससे विद्यार्थी पूरी शिक्षा होने तक भटक जाता है बेरोजगारी के इस युग में धन अर्जित करने की लालसा में नौकरी की तलाश पहले विद्यार्थी को रहती है ऐसी स्थिति में बीता हुआ यू याद आता है याद आती है वह गुरु शिष्य परंपरा से सीखी हुई घराने दार गायकी जो आज प्रयुक्त सी हो रही है।

निष्कर्ष

आज इस बात की आवश्यकता है कि सभी ज्ञानी एवं घराने के कलाकार एक साथ बैठकर सभी घरानों की विशेषता एवं आज की संस्थागत शिक्षण पद्धति की विशेषताओं को सम्मिलित कर एकरूपता लाए। जिससे छात्रों का बहुमुखी विकास हो सके।

संस्थाएं कला की दुकानदारी न कर उसे सुगंधित एवं मनोहारी उपवन बनाने का प्रयास करें तो संगीत को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया जा सकता है। संक्षेप में आधुनिक शिक्षा पद्धति में यदि घरानों के बीज बो दिए जाए तो हमारा आधुनिक शास्त्रीय संगीत निश्चित ही अपनी ऊंचाइयों को छू सकेगा। संगीत विद्वानों एवं शिक्षकों को इस विषय में गहन अध्ययन कर इसका हल निकालना ही होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. सक्सेना डॉ. मधुबाला, (1990), भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
2. गर्ग लक्ष्मी नारायण, गर्ग मुकेश, (1995 जनवरी फरवरी), संगीत शोध लेख अंक, संगीत कार्यालय, हाथरस
3. डॉ. पलनिटकर अलकनंदा, (2000), शास्त्रीय संगीत शिक्षा समस्याएं एवं समाधान, आदित्य पब्लिशर्स
4. डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग, (2012), संगीत निबंध सागर, संगीत कार्यालय, हाथर
5. संगीत कला विहार ,अखिल भारतीय गांधर्व मंडल, मिरज
6. शर्मा डॉ. मृत्युंजय, संगीत मैन्युअल, प्रकाशन एच.जी. पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली

Special Issue : 1.3
January 2023
Vol. : IX

Interdisciplinary Peer Reviewed Journal For Innovative Research And Evaluation

Loknayak

ISSN (L) 2278 - 4284

Indian Knowledge System : Concept, Scope and Criticism

Interdisciplinary Peer Reviewed Journal For Innovative Research And Evaluation

Loknayak

ISSN (L) 2278 - 4284

Special Issue : 1.3
January 2023
Vol. : IX

33	भारतीय ज्ञान परंपरा आणि राजकीय विचारधारा व शासन पद्धती डॉ. रविन्द्र भाऊराव देभूर्णे	203-205
34	भारतीय ज्ञानपरंपरा आणि ललित कला प्रा. सुधाकर चंद्रू मनवर	206-211
35	भारतीय ज्ञान परंपरा आणि भारतीय शेती प्रा. डॉ. डी. एम. गुरनुले	212-215
36	म. बसवेश्वरांचा शिक्षण विषयक दृष्टीकोन आणि वर्तमान प्रा. सच्चिदानंद श. बिचेवार	216-219
37	महिला सक्षमीकरणासाठी भारतीय कायदे आणि सद्यस्थिती प्रो. डॉ. कल्पना पंडित कोरडे	220-224
38	मातृभाषेतून शिक्षणप्रसार कार्यात जगन्नाथ शंकरशेट यांचे योगदान डॉ. सुभाष के. पवार	225-229
39	महिलोन्नतीतून सशक्त समाजनिर्मिती- राष्ट्रसंतांचे दूरदर्शीत्व डॉ. मृदुला अतुल नापस	230-236
40	'राष्ट्रीय शैक्षणिक भूमिकेचे जनक'- लोकमान्य बाळगंगाधर टिळक' डॉ. डांगरदिवे वासुदेव	237-241
41	[illegible] ज्ञानपरंपरा आणि संत कबीर [illegible] खेडकर	242-251
42	श्वेताश्वतरोपनिषदि वर्णितं योगस्यस्वरूपम् डॉ. दर्शना दि. बरगंटीवार	252-255
43	लोकायत दर्शनातील स्त्री : डॉ आ.ह.साळुंखे यांनी केलेल्या मांडणीचे चिकित्सात्मक अध्ययन - प्रा. प्रीतम वसंतराव गावंडे	256-263
44	"विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकासामध्ये मातृभाषेची भूमिका" संशोधक-कु.कल्पना श.रायजाधव	264-273
45	श्रीमद्भागवत महात्म्याच्या अनुषंगाने लक्ष्य प्राप्ती प्रा.डॉ. मंजुश्री श्रीपाद नेव्हल	274-281
46	संगीत कलेची गुरुकुल शिक्षण पद्धती व आधुनिक शिक्षण पद्धती प्रा. डॉ. एस.व्ही.शिंदे	282-286
47	संगीत कलेचे भारतीय ज्ञान परंपरेतील योगदान प्रा.डॉ.जयश्री विश्राम कुलकर्णी	287-290
.48	संगीत कलेचे भारतीय ज्ञान परंपरेतील योगदान सहा. प्रा. सुशील बावस्कर	291-295
49	सक्तीचे प्राथमिक शिक्षण सरकारचे आद्य कर्तव्य: गोपाळ गणेश आगरकर प्रा. डॉ. पठारे उत्तम आप्पासाहेब	296-301
50	प्राचीन भारतीय राजकीय परंपरेत कौटिल्याच्या सप्तांग सिद्धांताची भारतीय परराष्ट्र धोरणातील प्रासंगिकता	302-306

संगीत कलेचे भारतीय ज्ञान परंपरेतील योगदान

सहा. प्रा. सुशील वावरकर (संगीत विभाग)
श्री गणेश कला महाविद्यालय,
कुंभारी, ता. जि. अकोला महाराष्ट्र
मोबाईल ९८८१४७७८०३
Email:-sushilwawarkar@gmail.com

सारांश :-

प्रस्तुत शोधलेखनात भारतीय ज्ञान परंपरेत संगीताचे महत्त्व व योगदान विशद केले आहे. सोबतच प्राचीन काळापासून म्हणजेच रामायण, महाभारत काळापासून तर आज आधुनिक काळापर्यंत भारतीय ज्ञान परंपरेत संगीतात कशाप्रकारे परिवर्तन होत गेले यावर प्रकाश टाकला आहे. पूर्वी संगीतात गुरु शिष्य परंपरा कशी होती व त्यात बाह्य आक्रमणामुळे कसे बदल होत गेले, ब्रिटिश काळात संगीताची काय स्थिती होती व भारतीय संगीत कशा प्रकारे टिकून राहिले त्यात अनेक कलावंतांचे योगदान, परिश्रम व नंतर स्वातंत्र्योत्तर काळात संगीत कलेला मिळालेले पुनरुज्जीवन याविषयी प्रस्तुत शोधलेखन केले आहे.

मुख्य बिंदू :-

१) भारतीय ज्ञान परंपरेत संगीताचे महत्त्व

२) प्राचीन काळापासून आधुनिक काळापर्यंत संगीताचे बदलते स्वरूप

३) स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्योत्तर काळातील संगीत

प्रस्तावना :- प्राचीन काळापासून आपला भारत देश उच्च मानवीय मूल्य, विशिष्ट वैज्ञानिक परंपरा आणि अनेक ललित कलेने नटलेला देश राहिला आहे. त्यातही संगीतही सर्वश्रेष्ठ ललित कला. आज संपूर्ण विश्व भारतीय ज्ञान परंपरा आणि संगीत कलेचा स्वीकार करत आहे. भारताने प्राचीन काळापासून दर्शन, भाषा विज्ञान, अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्क, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष्य, आणि संगीत सारख्या अनेक मानवीय कल्याणकारी क्षेत्रात कीर्तिमान स्थापन करून मानवीय जातीची प्रगती करण्यात सिंहाचा वाटा उचलला आहे. प्राचीन वेद आणि अन्य शास्त्रांमध्ये चिकित्सा प्रणालीचा उल्लेख केला गेला आहे. चरक संहिता आणि सुश्रुत संहिता (१००० - ५०० ईसा पूर्व) मध्ये ७०० औषधी जडीबुटी साहित्याचे मुख्य पारंपारिक संग्रह उपलब्ध आहे.

भारतीय ज्ञान परंपरेत भारतीय संस्कृतीतील विविध कलांचे संवर्धन करण्यासाठी महान गुरु शिष्य परंपरा अगदी प्राचीन काळापासून अस्तित्वात आहे. रामायण, महाभारत काळापासून गुरुकुलात प्रतिभाशाली विद्यार्थ्यांची निवड करून त्यांना पारंगत केले जात असे. तसेच भारतीय संगीत कलेत गुरु शिष्य परंपरेपासून आधुनिक संगीत शिक्षणाचा प्रवास व संगीत कलेचे भारतीय ज्ञान परंपरेतील योगदान पुढीलप्रमाणे सांगता येईल.

सर्व ललित कलांमध्ये संगीत कलेचा उदय सृष्टीच्या निर्मिती बरोबरच झाला असे मानण्यात येते. सामाजिक परिवर्तने व संगीतातील परिवर्तने जणू हातात हात घालूनच चालत असल्याचे दाखले इतिहासात सापडतात.

गुरु शिष्य परंपरा :- संगीत कलेत गुरूंना पूर्वी खूप मानाचे स्थान होते. अनेक राजे महाराजे व बादशहांना आपल्या दरबारात मोठे संगीत तज्ञ आहेत याचा अभिमान वाटत असे. अशा थोर गुरूंचे अनेक राजे महाराजांनी शिष्यत्वही पत्करली होते. राजश्री लाभल्यामुळे हे कलावंत रात्रंदिवस संगीत साधना करून विद्यादानही करत असत. त्या काळात शिक्षणासाठी अनेक शिष्यांना पायपीट करावी लागत असे अखंड परिश्रम करून, गुरु सेवा करून शिष्यांना गुरुची मर्जी संपादन करावी लागत असे. आणि गुरूच्या समोर बसून विद्या ग्रहण करावी लागत असे. या काळात ग्रंथांची उपलब्धता व संगीत जतन करून ठेवण्याची काही सोय नसल्यामुळे शिष्यांना गुरुकुल पद्धती शिवाय कुठलाही पर्याय उपलब्ध नव्हता. तेव्हा गुरुगृही राहूनच शिक्षण पूर्ण झाल्यानंतरच या शिष्यांना आपली कला सादर करण्याची अनुमती त्यांच्या गुरूकडून मिळत असे.

प्राचीन काळापासून आजही गुरु शिष्य परंपरेचे महत्त्व अबाधित आहे. कारण सर्व ललित कलांपैकी संगीत ही अशी एकमेव कला आहे जी गुरुमुखातूनच घ्यावी लागते. स्वर तालाचे ज्ञान, आवाज व स्वर लावण्याचे तंत्र, राग विस्ताराची पद्धती अशा अनेक बाबी गुरुसमोर बसूनच सीना-ब-सीना पद्धतीने शिकणे आवश्यक आहे. त्यामुळे आजही संगीतात गुरु शिष्य परंपरेचे महत्त्व टिकून आहे.

ब्रिटिश कालीन संगीताची स्थिती :- भारतीय संस्कृती व भारतीय कला यांच्याकडे इंग्रजांनी कधीही लक्ष दिले नाही. त्यामुळे संगीत कलेला त्यांच्याकडून राजाश्रय मिळाला नाही. इंग्रजांनी भारतीय कला व संगीताची उपेक्षा केल्यामुळेच कलावंतांना संस्थानिकांचा अथवा कोठ्यांचा आधार घ्यावा लागला. त्यामुळे भारतीय श्रेष्ठ संगीत समाजातील कनिष्ठ लोकांच्या हाती गेले. त्यामुळे लोकांचा संगीताकडे पाहण्याचा दृष्टिकोन बदलला. सुसंस्कृत घरात संगीताचे नाव घेणे सुद्धा पाप ठरू लागले. तरीसुद्धा काही गुणी व्यक्तींनी कलाकारांनी संगीत कलेची ज्योती आपल्या परिश्रमाने तेवत ठेवली. त्यासाठी काही कलावंतांनी व संस्थानिकांनी अहोरात्र कष्ट घेतले. त्याकाळी भारत देशात ग्वाल्हेर, बडोदा, रामपूर, मैहर अशी छोटी छोटी संस्थाने होती. या संस्थानिकांनी अनेक कलावंतांना दरबारी गायक म्हणून नियुक्त केले आणि यातून संगीतात घराण्याचा जन्म झाला चौदाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात घराण्याचा उदय झाला शास्त्रीय गायन व त्यातल्या ख्याल ख्याल गायनाचा प्रसार होऊ लागला. मोगल सम्राट मोहम्मद शहा रंगीले यांच्या दरबारात सदारंग-अदारंग हे श्रेष्ठ ख्याल गायक होते.

ब्रिटिश काळातील ग्रंथ :- जयपूरचे राजे प्रताप सिंह यांनी संगीत कलावंतांच्या मदतीने 'संगीत सार' या ग्रंथाची निर्मिती केली. तर मोहम्मद रजा यांनी 'संगीत राग कल्पद्रुम ' हा ग्रंथ लिहिला. ज्यामध्ये हजारो धृपदे, ख्याल, आणि अन्य गीते समाविष्ट केली. सुरेंद्र मोहन टागोर यांनी 'युनिव्हर्सल हिस्टरी ऑफ म्युझिक' आणि 'म्युझिक ऑफ हिंदुस्तान' हे संगीत विषय ग्रंथ लिहून संगीत कलेला समृद्ध करण्याचा प्रयत्न केला.

पं.पलुस्कर व पं.भातखंडे यांचे योगदान :- पंडित विष्णू दिगंबर पलूसकर यांनी 5 मे 1901 रोजी लाहोर येथे गंधर्व महाविद्यालयाची स्थापना केली. तर पंडित विष्णू नारायण भातखंडे यांनी मॉरिस कॉलेज, माधव संगीत विद्यालय, भारतीय संगीत विद्यालय अशा विद्यालयांची निर्मिती केली. या दोन महान विभूतींमुळेच भारतीय संगीतात शास्त्र व क्रियात्मक संगीत यांचा समन्वय घडून आला. शास्त्रशुद्ध स्वर लेखन करून त्यांनी अनेक ग्रंथांची निर्मिती केली आणि स्वर लिपीची निर्मिती करून भारतीय संगीत जिवंत ठेवले.

संगीत संस्थांची स्थापना :- स्वातंत्र्यपूर्व काळात संगीताचा प्रसार होण्यासाठी अनेक कलावंतांनी संगीत संस्थांची स्थापना केली. गायक उत्तेजक मंडळी, उस्ताद अब्दुल करीम खां यांनी 'आर्य संगीत विद्यालय', पंडित गजानन बुवा जोशी यांनी 'शिवानंद संगीत प्रतिष्ठान', याचरोबर पुणे गायन समाज, भारत गायन समाज अशा अनेक संगीत मंडळींनी अनेक मैफिली घडून आणल्या व संगीताच्या प्रसारासाठी मोलाचे योगदान दिले.

स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर अनेक छोटी छोटी संस्थाने संघ राज्यात विलीन झाली. याचाच परिणाम म्हणून पूर्वी जे संगीत राजाश्रयी होते ते लोकाश्रयी झाले. स्वातंत्र्यप्राप्ती पूर्वी उपेक्षित असलेल्या संगीताला स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर शासन आणि जनतेने तसेच कलावंतांनी पुनरुज्जीवित करण्याचा प्रयत्न केला.

१) शासनाकडून संगीताचे संवर्धन :- स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर शासनाकडून संगीत कलावंतांना प्रोत्साहन देण्यासाठी राष्ट्रपती पदक देऊन गौरविले जाऊ लागले. संगीत नाटक अकादमी व ललित कला अकादमी ची स्थापना झाली. संगीत क्षेत्रातील नवोदित कलावंतांना शासनाकडून शिष्यवृत्ती दिल्या जाऊ लागली.

२) लोककलावंतांना राजाश्रय :- भारतीय संगीताचे मूळ हे लोक संगीतात आहे. संस्कृतीचा आरसा असलेल्या लोककलांचे संवर्धन करण्याची जबाबदारी शासनाने उचलली. महाराष्ट्रातील अस्सल लोककला प्रकार लावणी, भारुड, गोंधळ, पोवाडा अशा कलाविष्कारांना पूर्वी लोक मान्यता नव्हती. म्हणून स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर शासन दरबारी याची नोंद घेतल्या गेली. अशा कलावंतांना मानधन देऊन कला जतन केली गेली. कुमार गंधर्वांनी लोकसंगीताचा अभ्यास करून नवीन रागाची निर्मिती केली.

३) संगीत विषयक ग्रंथांची निर्मिती :- स्वातंत्र्यानंतर क्रियात्मक व तांत्रिक या विषयांवर अनेक ग्रंथांचे लेखन झाले. आचार्य बृहस्पती यांचे 'राग रहस्य', भरत का संगीत सिद्धांत, पंडित कुमार गंधर्व यांचे अनुप राग विलास, पंडित विनायकराव पटवर्धन यांचे राग विज्ञान याचबरोबर पंडित वामनराव देशपांडे, अशोक रानडे, स्वामी प्रज्ञानंद यांच्यासह अनेक लेखकांनी ग्रंथ लेखन करून भारतीय संगीत साहित्य समृद्ध केले.

४) दृकश्राव्य माध्यमे :- संगीत क्षेत्रात दृकश्राव्य माध्यमांनी अमुलाग्र बदल घडवून आणला. रेडिओच्या माध्यमातून संगीत साधकांसाठी अनेक कार्यक्रमांच्या आयोजन करण्यात येऊ लागले. नवोदित कलावंतांसाठी स्पर्धेच्या माध्यमातून प्रोत्साहन देण्यात येऊ लागले. आकाशवाणी, दूरदर्शन वरून सांघिक कार्यक्रम होऊ लागले सोबतच विविध संगीत समारोहांचे प्रत्यक्ष प्रक्षेपण सादर होऊ लागले. भारतीय संगीत सभांचे प्रसारण आकाशवाणी - दूरदर्शनवर होऊ लागले.

५) संगीत महोत्सवांचे आयोजन व पुरस्कार :- संगीत संस्था, सांस्कृतिक व सामाजिक संस्था व शासन यांच्या वतीने अनेक संगित महोत्सवांचे आयोजन आज होत आहे. त्यात तानसेन संगीत समारोह, पुण्यातील सवाई गंधर्व महोत्सव, पुणे फेस्टिवल, बाणगंगा महोत्सव, वेरूळ महोत्सव अशा अनेक महोत्सवांच्या माध्यमातून भारतीय संगीत जनमानसात रुजविण्याचे काम आज होताना दिसत आहे. शासनाकडूनही पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण, भारतरत्न यासारखे विविध पुरस्कार देऊन थोर कलावंतांना गौरविण्यात येत आहे.

६) शालेय शिक्षण व संगीत :- भारतीय संगीताचा प्रसार व प्रचार होण्यासाठी शालेय शिक्षणात संगीत विषय अनिवार्य करण्यात आला आहे. तसेच महाविद्यालय व विद्यापीठ स्तरावर सुद्धा आज संगीत विषय शिकविला जात आहे. गांधर्व महाविद्यालय सारख्या विविध संगीत संस्थांच्या वतीने गायन, वादन व नृत्य विषयाच्या परीक्षा घेतल्या जात आहे ज्यातून अनेक कलाकार व कानसेन तयार होत आहेत.

७) शोध व संगीत :- आज मोबाईल, संगणक व इंटरनेट मुळे घराण्याची बंधने शिथिल झाली आहेत. इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्यांच्या निर्मितीमुळे संगीत क्षेत्रात अमुलाग्र बदल झाला आहे. इलेक्ट्रॉनिक्स तानपुरा, तबला, लहरायंत्र, हवाई गिटार, सिंथेसायझर अशा वाद्यांच्या निर्मितीमुळे संगीत शिक्षणात मोलाची भर पडली आहे. यासोबतच संगीतात संशोधन करण्याच्या दृष्टीने सौंदर्यशास्त्र, संगीत व रोग चिकित्सा, संगीत व मनोविज्ञान, संगीत व अध्यात्म, संगीत व संगीताचा इतिहास, घराणे अशा अनेक विषयात शोध कार्य सुरू आहे.

समारोप :- उपरोक्त बाबींच्या आधारे आपण असे म्हणू शकतो की संगीत कलेचे भारतीय ज्ञान परंपरेत मोलाचे योगदान आहे.

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

१) सक्सेना डॉ. मधुबाला, (१९९०), भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगड

२) गर्ग लक्ष्मीनारायण, गर्ग मुकेश(१९९५ जनवरी फरवरी), संगीत शोध लेख अंक, संगीत कार्यालय, हाथरस

३) डॉ. पलनीटकर अलकनंदा.(२०००), शास्त्रीय संगीत शिक्षा, समस्या एवं समाधान, आदित्य पब्लिशर्स

४) संगीत कला विहार, अखिल भारतीय गांधर्व मंडळ, मिरज

५) https://rajbhawan.rajasthan.gov.in

६) https://vishwakosh.marathi.gov.in